सत्र 2022–23

Madhyma Diploma in Performing Art (M.D.P.A.)
Final Year
(Private)

S.No.	Paper Description	Maximum	Minimum
01.	Theory – I	100	33
02.	Practical – Demonstration & Viva	100	33
	Grand Total	200	66

सत्र 2022–23
स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु
मध्यमा डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट अंतिम वर्ष (M.D.P.A.)
तबला (शास्त्र)

समय : 3 घंटे

अंक योजना	
पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	33%

इकाई 1

तबला वादक के गुण–दोष। काल, मार्ग, क्रिया, तथा अंग की संक्षिप्त जानकारी। प्रायोगिक पाठ्यक्रम में सीखे गये विभिन्न रचना प्रकारों को ताल लिपि में लिखने का अभ्यास।

इकाई 2

मुगल काल से अब तक के संगीत का संक्षिप्त इतिहास तथा तबले के घरानों की संक्षिप्त जानकारी।

इकाई 3

गीत के अवयव–स्थायी, अंतरा, संचारी, आभोग, की जानकारी। निम्नलिखित पर टिप्पणियां–परन (चक्करदार तथा फरमाईशी), उठान, गत, स्वतंत्र वादन, संगत खुले तथा बन्द बोल।

इकाई 4

पिछले वर्षो में सीखे गये तालों के अतिरिक्त धमार तथा सवारी (15 मात्रा) तालों की दुगुन तथा चौगुन ताललिपि में लिखना। रूपक, झपताल, एकताल, इन तालों के ठेके तिगुन की लयकारी में ताललिपि में लिखना।

इकाई 5

विष्णु दिगम्बर ताललिपि पद्वति की संक्षिप्त जानकारी। तथा पाठ्यक्रम के तालों को विष्णु दिगम्बर ताललिपि में लिखना।

सत्र 2022–23

स्वाध्यायी परीक्षार्थियों हेतु

मध्यमा डिप्लोमा इन परफॉर्मिंग आर्ट अंतिम वर्ष (M.D.P.A.)

क्रियात्मक

अंक योजना	
पूर्णांक	न्यूनतम उत्तीर्णांक
100	33%

1. तीनताल व झपताल में लहरे के साथ पेशकार, कायदे, रेले, मुखड़े, तिहाई, तथा सरल परन, चक्करदार परन के साथ स्वंतत्र वादन तथा हाथ से ताली देकर पढ़न्त।

2. तीनताल में :–(अ) बनारस घराने का कोई एक कायदा चार पल्टे, तिहाई सहित।

   (ब) धाऽतिर किटतक धिरधिर किटतक धाऽतिर किटतक तीनाकिटतक, रेला चार पलटों व तिहाई सहित बजाना।

3. रूपक में सरल परन लहरे के साथ बजाना। तथा एकताल में दो मुखड़े व दो तिहाई लहरे के साथ बजाना।

4. चौताल, धमार, सूलताल, इन तीनों तालों को खुले हाथ से तबले पर बजाना।

5. दादरा तथा कहरवा में चार–चार लग्गियां तथा तिहाई।

6. विलंबित एकताल एवं तिलवाड़ा, ठेके बजाने का अभ्यास तथा त्रिताल, एकताल का द्रुत ठेका तैयारी के साथ बजाना।

:संदर्भ सूची:

1. तबला प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा
2. तबला कौमुदी भाग 1 एवं 2 – पं. रामशंकर पागलदास
3. ताल प्रकाश – श्री भगवतशरण शर्मा